"स्वामी रामनंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड की पीएच. डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध - प्रबंध की रूपरेषा"

"संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श"

: शोध छात्रा :

सौ. रुपाली अरुण लुटे / कवाडे

(एम.ए. सेट)

: शोध - निर्देशक :

डॉ. जोगेंद्रसिंह बिसेन

(एम.ए., एम. फिल., पीएच. डी.)

विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

तथा

प्राचार्य, दयानंद कला महाविद्यालय,

लातूर

मे - २०१७

प्रस्तावना :

भौगोलिक एवं जनसंख्यां की दृष्टिसे हमारा देश विशाल देश माना गया है। प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टिसे हमारे देश की संस्कृति, कला, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था तथा साहित्य की अपने आपमें विशिष्ट पहचान है।

संजीव एक कथाकार के रूपमे अक्सर समाज से वंचित पीडित वर्ग के मसीहा, पक्षधर बनकर उपस्थित रहे।

सबसे खेदपूर्ण बात यह है कि, मानव समाज का जहाँसे विकास हुआ वही मानव का आदि पहलु आज भी गरीब, निरक्षर अविकसित तथा विश्व के मानचित्र से अदृश्य है। इस गरीबी रेखा से नीचे के स्तरपर पलने वाले तथा समाज से अलग समुदाय को आदिवासी की संज्ञा प्रदान की जाती है।

वर्तमान समय मे इन आदिवासियों के रहने का स्थल बने दुर्गम और पहाड़ी स्थलों पर सभ्यता का चोला पहने लुटेरे, मानव जातिपर कलंक, अत्याचारी शोषक, समाज अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहा है।

उक्त शोध प्रबंध आदिवासियों की समस्याओं को ध्यान मे रखकर लिया गया है। हमारे भारत में आजतक साहित्य पर जो भी लेखन कार्य गद्य साहित्य, समकालीन साहित्य, स्वतंत्रता पूर्व साहित्य, स्वातंत्र्योत्तर साहित्य, आधुनिकता वाद, उत्तर आधुनिकता, नारी लेखन, दलित साहित्य आदि इन सबमे हमारे देश के जो प्रमुख आदि निवासी है जो आज भी जंगलों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी और किसीने भी ध्यान नहीं दिया।

मैने शिक्षा क्षेत्र मे एम. ए. सेट की उपाधि हिंदी साहित्य में प्राप्त की है। स्वातंत्र्योत्तर अर्थात उत्तरशती के हिंदी उपन्यासों में व्यक्त आदिवासी समस्याओं की ओर मेरा ध्यान गया और मैंने उत्तर शती के हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समस्याएँ इस विषय पर अनुसंधान करने का निश्चय किया।

मेरे अनुसंधान की रूपरेषा इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय

आदिवासी विमर्श संकल्पना एवं स्वरुप

द्वितीय अध्याय

संजीव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय

संजीव की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

संजीव की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन

पंचम् अध्याय

संजीव के उपन्यासों में आदिवासी विमर्श

षष्टम् अध्याय

संजीव के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

सप्तम् अध्याय

उपसंहार

प्रथम अध्याय

आदिवासी विमर्श संकल्पना एवं स्वरुप

किसी भी साहित्य का विश्लेषन करने से पूर्व हमे उस साहित्य का स्वरुप तथा संकल्पना समझना आवश्यक होता है। तभी हम इस साहित्य पर काम कर सकते हैं। हमारे देश के साहित्य का स्वरुप बहुत ही व्यापक और बहुआयामी है। एक भाषा का साहित्य समझने मे इतनी कठिनाई नही होती, जितनी कठिनता अनेक भाषाओं के साहित्य को समझने में होती है। दूसरी बात यह है कि, उसकी सभ्यता और संस्कृति के आधार पर निर्मित हुआ जो साहित्य है उसे समझने में काफी समस्याएँ आती है।

महाभारत में सिर्फ एकलव्य को देखते हैं जो जंगल निवासी भील राजकुमार था।

मेरे विचार से जब आदिवासी साहित्य का विचार हो, उस पर लेखन कार्य है। उनकी शौर्य गाथाओं, कथाओं या फिर वर्तमान में हो रही उनकी सुधारवादी योजनाएँ उनमें आ रहा परिवर्तन या उन सबको पाने के लिए उनमें हो रहा संघर्ष जब तक हम पटल पर नहीं लाते तब तक हमारे साहित्य का गौरव अपूर्ण है। प्रस्तुत अध्याय में आदिवासी शब्द की संकल्पना और उसके स्वरुप को स्पष्ट कर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

द् वितीय अध्याय

संजीव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व :-

व्यक्तित्व के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक तथा भावनिक जैसी बातों का विचार किया जाता है इस संबंध में डॉ. सरोज मार्कण्डेय लिखते है कि, "व्यक्तित्व मात्र शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक पुजीभूत रूप है। संजीव के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को विस्तारपूर्वक देखा जा सकता है।

१. अध्ययनशील

२. संवेदनशील

३. जिज्ञासु

४. पीडित नारियों एवं दलितों के हिमायती

५. कठोर परिश्रमी

कृतित्व :-

कथाकार संजीव हिंदी के सशक्त और प्रभावशाली साहित्यकार है। संजीव की रचनाओं के विषय यथार्थ जीवन से जुझने वाले हैं। अनुभवों से परिपूर्ण हैं। इसलिए वे जीवन की निकटता की अनुभूती प्रदान करते हैं। उन्होंने -

११ कहानियाँ

७ उपन्यास

९ नाटक

२ बाल उपन्यास

९ यात्रा वृत्तांत

२ फिल्म / चलचित्र

इस अध्याय में संजीव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला जायेगा तथा कृतित्व का संक्षेप में विश्लेषण देकर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

तृतीय अध्याय

संजीव की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन

संजीव की कहानियों का फलक व्यापक रहा है। इनकी कहानी कला वर्जित, उपेक्षित, क्षेत्रों की गहराई से पड़ताल करती है। संजीव मूलतः बैचेन खोज के कथाकार है। इसी कारण वे हर बार नये विषयको न केवल उपस्थित करते हैं अपितु उसकी गहरी छानबीन करते हैं।

संजीव की कहानियों का कथ्य मूलतः शोषित दमित, दलित वेदना की सार्थक अभिव्यक्त करता है।

१. ब्लैकहोल

२. नस्ल

३. अपराध

४. दुनिया की सबसे हसीन औरत

५. अरोहण

६. ट्रैफिक जाम

७. हिमरेखा

८. सागर सीमांत

९. धावक

१०. पूत, पूत, पूत, पूत.

आदि कहानियों का कथ्यगत अध्ययन प्रस्तुत कर निष्कर्ष दिए जायेंगे।

चतुर्थ अध्याय
संजीव की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन

कथाकार संजीव के कथा, साहित्यों में, भाव, विचार आदि को अभिव्यक्त किया है। इस अभिव्यक्ति को शिल्प के सहारे प्रस्तुत किया है। इसी कारण इनके कथा साहित्य में शिल्प की अलग - सी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है।

शिल्प शब्द, शिल्प धातु और "पक" प्रत्यय से बना है। शिल्प को अंग्रेजी में "टेकनीक" कहा जाता है। जिसका अर्थ है तरीका, प्रविधि, ढंग, प्रक्रिया और विधि।

संजीव की कहानी दुनिया की सबसे हसीन औरत में शिल्पगत अध्ययन अच्छे से नजर आता है। प्रस्तुत अध्याय में संजीव की कहानियों के शिल्प पक्ष का विश्लेषण किया जायेगा। जिसमें वाक्यविधान, शब्द, मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियाँ, उपमा, विशेषण, लेखन की विभिन्न शैलियाँ आदि का विश्लेषण कर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

पंचम् अध्याय
संजीव के उपन्यासों में आदिवासी विमर्श

संजीव के उपन्यासों में मूलतः पिछड़े, उपेक्षित, वर्जित, क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा वर्ग वाणी देते हैं। वे प्रेमचंद और रेणु की विरासत को वर्तमान संदर्भ में निष्ठा से आगे बढ़ाते हैं। उनके उपन्यास परंपरा को पिष्ठपेषण नहीं करते वे युगीन परिपेक्ष्य से उसका मूल्यांकन करते हैं।

उनके अंदर का लोकधर्मी कलाकार त्रासद जीवन के पीछे स्थित, कुटिल साजिशों को पोल खोलकर बुनियादी तथ्यों को उद्‌घाटन करता है। फिर चाहे पिछड़ा भू-भाग हो, सर्कस की दुनिया हो, कोयला क्षेत्र हो।

उनके उपन्यास

१. किसनगढ़ के अहेरी

२. सावधान ! नीचे आग है।

३. धार

४. पाँव तले की दुब

५. जंगल जहाँ शुरु होता है।

६. सुत्रधार

७. आकाश चंपा

आदि उपन्यासों में आदिवासी चित्रण का अनुशीलन कर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

षष्टम् अध्याय

संजीव के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में संजीव के उपन्यासों का शिल्पगत विवेचन किया जाएगा। शिल्प अर्थात 'टेकनीक' / उपन्यास निर्माण की प्रक्रिया में जिन उपकरणों का प्रयोग किया हैं जैसे वाक्य विवेचन, शब्द भंडार, मुहावरें, कहावतें, शैलियाँ, उपमान, विशेषण आदि तथा निष्कर्ष दिये जायेंगे।

सप्तम् अध्याय

उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में समग्र शोध - प्रबंध का निचोड प्रस्तुत कर निष्कर्ष दिए जायेंगे।

शोध छात्रा

सौ. रुपाली अरुण लुटे / कवाडे

शोध - निर्देशक

डॉ. जोगेंद्रसिंह बिसेन

(एम.ए., एम.फिल., पीएच. डी.)

विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर